पाठ 13
ग्राम्य जीवन

● **मैथिलीशरण गुप्त**

आइए, सीखें : ग्रामीण जीवन व संस्कृति का सामान्य ज्ञान। ♦ सौन्दर्य बोध का भाव जगाना। ♦ सर्वनाम शब्दों की पहचान

1.

अहा ! ग्राम्य-जीवन भी क्या है,
क्यों न इसे सब का मन चाहे।
थोड़े में निर्वाह यहाँ हैं,
ऐसी सुविधा और कहाँ है।
यहाँ शहर की बात नहीं है,
अपनी-अपनी घात नहीं है।
आडम्बर का काम नहीं है,
अनाचार का नाम नहीं है।

2.

सीधे -सादे भोले-भाले ,
हैं ग्रामीण मनुष्य निराले।
एक दूसरे की ममता है,
सब में प्रेममयी समता है।
यद्यपि वे काले हैं तन से
पर अति ही उज्ज्वल हैं मन से।
अपना और ईश्वर का बल है,
अन्त:करण अतीव सरल है।

3

प्राय: सबकी सब विभूति हैं,
पारस्परिक सहानुभूति है।
कुछ भी ईर्ष्या-द्वेष नहीं है,
कहीं कपट का लेश नहीं है।
छोटे से मिट्टी के घर हैं,
लिपे-पुते हैं, स्वच्छ सुघर हैं ।
गोपद चिह्नित आँगन तट हैं,
रखे एक और जल-घट हैं।

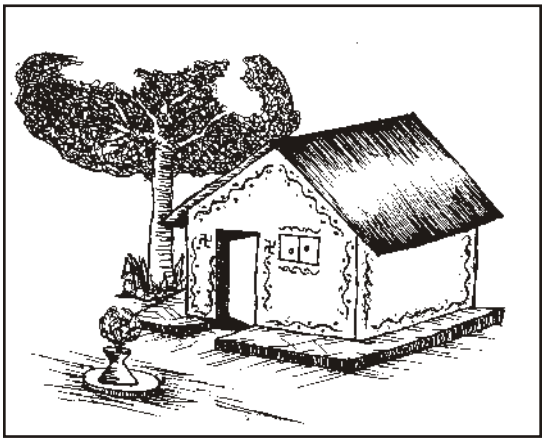

शिक्षण संकेत -

♦ कविता को हाव-भाव व लय के साथ प्रस्तुत करें। ♦ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के व व्यक्तियों के स्वभाव के अन्तर को स्पष्ट करें। ♦ लोक संस्कृति व लोक जीवन की झलक प्रस्तुत करें। ♦ शब्दों के अर्थ पूछकर वाक्यों में प्रयोग हेतु कहें।

4.

खपरैलों पर बेलें छाईं,
फूली-फली हरी,मन भाई।
काशीफल कुष्मांड कहीं है,
कहीं लौकियाँ लटक रहीं हैं।
है जैसा गुण यहाँ हवा में,
प्राप्त नहीं डॉक्टरी दवा में।
सन्ध्या समय गाँव के बाहर,
होता नंदन विपिन निछावर।

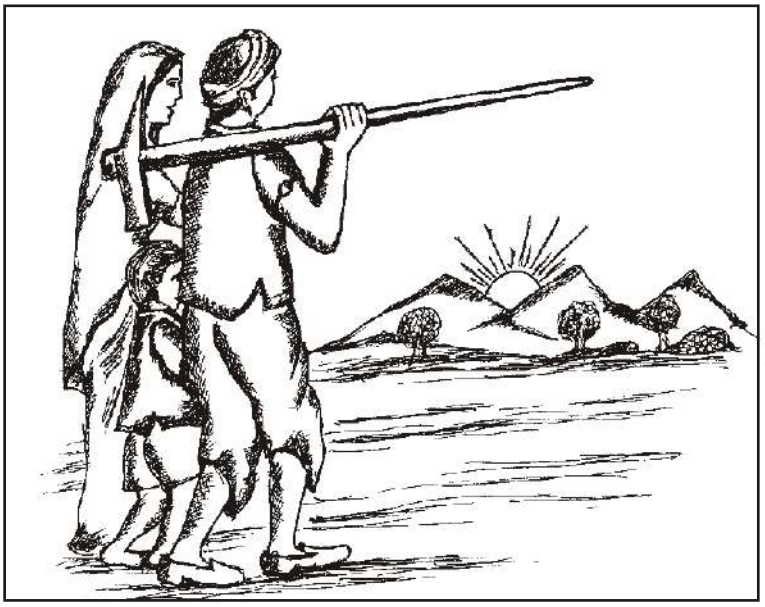

5.

श्रम-सहिष्णु सब जन होते हैं,
आलस में न पड़े सोते हैं।
दिन-दिनभर खेतों में रहकर,
करते रहते काम निरंतर।
अतिथि कहीं जब आ जाता है,
वह आतिथ्य यहाँ पाता है।
ठहराया जाता है ऐसे ,
कोई संबंधी हो जैसे।

नए शब्द

घात = दाव पेंच, छल । **आडम्बर** = ढोंग, दिखावा। **अनाचार** = बुरा व्यवहार, दुराचरण । **ग्रामीण** = गाँव में रहने वाला, देहाती। **अन्तःकरण** = हृदय । **अतीव** = बहुत, अत्यंत, अत्यधिक । **विभूति** = वैभव, धन संपत्ति। **द्वेष** = बैर, विरोध । **कपट** = छल, दुराव, छिपाव। **लेश** = अंश मात्र, थोड़ा सा भी । **सुघर** = सुडौल, सुन्दर । **गोपद** = गाय के खुर । **काशीफल** = कद्दू । **कुष्मांड** = कुम्हड़ा, सफेद कद्दू । **विपिन** = वन, जंगल। **निराले** = अनोखे ।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) सही जोड़ी बनाइए-

सीधे-सादे भोले-भाले	-	प्राप्त नही डाक्टरी दवा में।
गोपद-चिह्नित आँगन तट हैं	-	पर अति ही उज्ज्वल हैं मन से।
यद्यपि वे काले हैं तन से	-	रखे एक ओर जल घट हैं।
है जैसा गुण यहाँ हवा में	-	हैं ग्रमीण मनुष्य निराले।

(ख) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(अ) एक दूसरे की ममता है, सब में ..... समता है। (प्रेममयी,क्रोधमयी)

(ब) छोटे से ..... के घर हैं, लिपे-पुते हैं, स्वच्छ सुघर हैं।लकडी,मिट्टी)

(स) खपरैलों पर बेलें छाईं,..... हरी, मन भाई।

(फूली-फली, खिलीखिली)

(द) प्राय: सबकी सब विभूति हैं, पारस्परिक .....है।

(अनुभूति,सहानुभूति)

3. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) आडम्बर और अनाचार किन लोगों में नहीं होता है?

(ब) हवा को किससे बढ़कर बताया है?

(स) गाँवो में आँगन तट कैसे होते हैं?

(द) कवि ने नन्दन-विपिन को किस पर निछावर किया है?

4. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) कवि ने ग्राम्य जीवन को शहरी जीवन से श्रेष्ठ क्यों माना है?

(ब) गाँव के घरों की क्या विशेषताएँ होती हैं?

(स) गाँव वालों का स्वभाव कैसा होता है?

(द) 'श्रम-सहिष्णु सब जन होते हैं।' से कवि का क्या आशय है?

(ई) गाँवों में अतिथि-सत्कार किस प्रकार होता है?

भाषा की बात-

(1) बोलिए और लिखिए-

ग्रमीण, अन्त:करण, उज्ज्वल, श्रम, सहिष्णु,

(2) सही वर्तनी पर गोला लगाइए -

निरवाह, निर्वाह, निवार्ह, र्निवाह,

साहानुभूति, शहानुभूति, सहानुभूति, सहानूभूती,

आतिथ्य, अतिथ्य, आतीथ्य, आतिथय,

आर्शीवाद, आसीरवाद, आशीवार्द, आशीर्वाद

(3) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

अपनी-अपनी, सीधे-सादे, दिन-दिन, ग्राम्य-जीवन

(4) निम्नलिखित शब्दों में से जल, हवा, और विपिन के समानार्थी (पर्यायवाची शब्द) छाँटकर लिखिए-

वायु, पानी , वन, जंगल, पवन, नीर, समीर, कानन, सलिल

जल	हवा	विपिन

(5) निम्नलिखित शब्दों में तत्सम और तद्भव शब्द छाँटकर सूची बनाइए -

पद, चाँद, पैर, नैन, हाथ, धरा, अमिय, काम, चन्द्र, हस्त, अग्नि देवता, सुभीता, नयन, धरती, देव, सुविधा, कार्य, आम, अश्रु, आग, आम्र, आँसू।

■ **ध्यान दीजिए**

राजा ने जिद्दी किसान की बात सुनने के बाद कहा- यहाँ के जान-माल की रक्षा करने के लिए मैं राजा बना। अब तुम्हारी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। तुम व्यर्थ परेशान हो रहे हो। पंचों को बुलाओ, उन्हें मैं समझाऊँगा, और उनकी समस्या हल कर दूँगा। उसने पंचों को इकट्ठा किया।

उपर्युक्त अनुच्छेद में रेखांकित शब्द मैं, तुम्हारी, मेरा, तुम, उन्हें, उनकी, उसने, संज्ञा शब्दों (राजा और किसान के) स्थान पर प्रयोग किये गए हैं। और ये शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(6) नीचे दी हुई पंक्तियों में से सर्वनाम शब्द छाँटिए-

(अ) क्यों न इसे सबका मन चाहे।

(ब) अपनी-अपनी घात नहीं है।

(स) तो न उसे आती बरबादी।

(द) देती याद उन्हें चौपालें।

(ई) सब में प्रेममयी ममता है।

अब करने की बारी

- अपने शिक्षक या मित्रों के साथ किसी गाँव का भ्रमण कीजिए तथा अपने अनुभव को उत्तरपुस्तिका मे लिखिए। अपने भ्रमण के आधार पर एक चित्र बनाइए।
- गाँव में उत्पन्न होने वाले दस अनाज /दलहन की सूची बनाइए ।